

कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 03 भाग 10, (मार्च, 2024)
पृष्ठ संख्या 37-39

जैविक खेती: आधुनिकता के संग-संघर्ष और संभावनाएँ



नगमा बी¹, रिकू भास्कर² एवं छेदालाल³,

¹प्रवक्ता, जंतु विज्ञान विभाग,
इम्पैक्ट कॉलेज ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी, रामपुर (उ.प्र.)

²पी. एच. डी. शोध छात्र,

पादप रोग विज्ञान विभाग,

सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय,

मोदीपुरम मेरठ (उ. प्र.)

³प्रवक्ता, कृषि विज्ञान विभाग,

इम्पैक्ट कॉलेज ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी, रामपुर (उ.प्र.), भारत।

Email Id: rinkubhaskar0113@gmail.com

आज की भाग-दौड़ भरी जिंदगी में स्वस्थ रहने के लिए अच्छा खाना बहुत महत्वपूर्ण है। इसलिए, 'ईट हेल्दी-लिव हेल्दी' के नारे के तहत लोग अब ऑर्गेनिक फूड्स की ओर अधिक ध्यान दे रहे हैं। काम के चक्कर में लोग अक्सर सही समय पर सही खाने-पीने का ध्यान नहीं रख पाते हैं, जिससे उनका स्वास्थ्य प्रभावित होता है। खान-पान की चीजों में रसायनों और उर्वरकों का इस्तेमाल बढ़ गया है, जो अनहेल्दी भोजन का कारण बन सकते हैं। ऑर्गेनिक फूड्स में रसायनिक कीटनाशकों, उर्वरकों और आनुवंशिक रूप से संशोधित जीवों का इस्तेमाल नहीं होता है, जिससे इनका सेवन करने से स्वास्थ्य को कोई नुकसान नहीं पहुंचता।

इसके अलावा, ऑर्गेनिक फूड्स में प्राकृतिक तत्व जैसे विटामिन, मिनरल्स, प्रोटीन, कैल्शियम, आयरन आदि होते हैं, जो हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए आवश्यक होते हैं। इस तरह, ऑर्गेनिक फूड्स न केवल हमारे स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद होते हैं, बल्कि ये पर्यावरण के लिए भी अधिक संवेदनशील होते हैं, क्योंकि उनके उत्पादन में हानिकारक रसायनों का उपयोग नहीं होता। इस प्रकार, जैविक खेती और ऑर्गेनिक फूड्स

हमारे स्वास्थ्य के साथ-साथ पर्यावरण के लिए भी अच्छे होते हैं।

जैविक खेती एक प्रकार की कृषि है जिसमें प्राकृतिक और पर्यावरण-अनुकूल प्रथाओं का उपयोग किया जाता है। इसमें रासायनिक कीटनाशकों, उर्वरकों और आनुवंशिक रूप से संशोधित जीवों (जी. एम. ओ.) के उपयोग से बचाव किया जाता है। इसके बजाय, जैविक किसान मिट्टी की उर्वरता बनाए रखने और कीटों को नियंत्रित करने के लिए फसल चक्र, खाद और जैविक कीट नियंत्रण जैसी तकनीकों पर भरोसा करते हैं। जैविक खेती का उद्देश्य पारिस्थितिक संतुलन को बढ़ावा देना, जैव विविधता का संरक्षण करना और स्वस्थ, टिकाऊ भोजन का उत्पादन करना होता है। यह कृषि के प्रति अधिक टिकाऊ और पर्यावरण के प्रति जागरूक दृष्टि कोण का समर्थन करने का एक शानदार तरीका है।

जैविक खेती के प्रकार:-

1. **शुद्ध जैविक खेती:** इस प्रकार की जैविक खेती में, किसान जैविक सिद्धांतों और प्रथाओं का सख्ती से पालन करते हैं। यहाँ पर किसी भी प्रकार के संश्लेषित उर्वरकों, कीटनाशकों या आनुवंशिक जीवों का उपयोग

नहीं किया जाता है। फसलों का उत्पादन और पशुधन बढ़ाने के लिए प्राकृतिक तरीके अपनाए जाते हैं। इसका उद्देश्य ऐसे खाद्य प्रणाली का उत्पादन करना है जो पर्यावरणीय स्थितियों को ध्यान में रखते हुए संश्लेषित रसायनों से मुक्त हो।

2. एकीकृत जैविक खेती: यह जैविक खेती का एक प्रकार है जिसमें जैविक सिद्धांतों को एकीकृत कीट प्रबंधन (आई. पी. एम.) के साथ जोड़ा जाता है। इस प्रकार में, किसान अनेक प्राकृतिक तकनीकों का उपयोग करते हैं जैसे कि फसल चक्र, खाद बनाना और प्राकृतिक कीट नियंत्रण। यह दृष्टिकोण संश्लेषित रसायनों के उपयोग को कम करता है और जैव विविधता को बढ़ावा देता है।

जैविक खेती की तकनीक :

जैविक खेती तकनीकें कृषि में उपयोग की जानेवाली प्रथाओं के एक समूह को संदर्भित करती हैं जो संश्लेषित रसायनों और आनुवंशिक रूप से संशोधित जीवों (जी. एम. ओ.) से बचते हुए प्राकृतिक आदानों और विधियों के उपयोग को प्राथमिकता देती हैं। इन तकनीकों में शामिल हैं:

- **फसल चक्र:** विभिन्न फसलों को एक विशिष्ट क्रम में चक्रित करने से कीट और रोग चक्र को तोड़ने में मदद मिलती है, मिट्टी की उर्वरता में सुधार होता है और रासायनिक आदानों की आवश्यकता कम हो जाती है।
- **खाद बनाना:** जैविक अपशिष्ट पदार्थों, जैसे खाद्य स्क्रैप और फसल अवशेष, को खाद में पुनर्चक्रित करने से मिट्टी पोषक तत्वों से समृद्ध होती है और इसकी संरचना में सुधार होता है।
- **प्राकृतिक कीट नियंत्रण:** लाभकारी कीड़े, जाल और फेरोमोन जैसे जैविक नियंत्रण को लागू करने से संश्लेषित कीटनाशकों पर भरोसा किए बिना कीटों के प्रबंधन में मदद मिल सकती है।
- **कवर फसल:** परती अवधि के दौरान फलियां या घास जैसी कवर फसलें लगाने से मिट्टी के

कटाव को रोकने में मदद मिलती है, मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार होता है और कार्बनिक पदार्थ बढ़ते हैं।

- **मल्लिचंग:** पौधों के चारों ओर जैविक गीली घास, जैसे पुआल या लकड़ी के चिप्स लगाने से नमी को संरक्षित करने, खरपतवारों को दबाने और मिट्टी की गुणवत्ता में सुधार करने में मदद मिलती है।
- **एकीकृत कीट प्रबंधन (आई. पी. एम.):** समग्र और टिकाऊ तरीके से कीटों और बीमारियों का प्रबंधन करने के लिए जैविक नियंत्रण, संश्लेषित प्रथाओं और निगरानी तकनीकों सहित विभिन्न रणनीतियों का संयोजन।

ये तकनीकें कृषि में जैव विविधता, मृदा स्वास्थ्य और पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा देती हैं। जैविक खेती संश्लेषित रसायनों के उपयोग को कम करते हुए और प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र को संरक्षित करते हुए भोजन का उत्पादन करने का एक तरीका है।

जैविक खेती की आवश्यकता :-

- रासायनिक उर्वरकों के अत्यधिक उपयोग से मिट्टी की उर्वरता कम हो जाती है।
- रसायनों के अत्यधिक उपयोग से मिट्टी, पानी और वायु प्रदूषण हुआ है।
- पारिस्थितिकी तंत्र का संरक्षण करना।
- सतत विकास को बढ़ावा देना।
- सस्ती खेती।
- भोजन की सुरक्षा के कारण जैविक उत्पादों की बढ़ी मांग।

जैविक खेती एक प्रकार की कृषि है जिसका उद्देश्य टिकाऊ, पर्यावरण-अनुकूल तरीके से भोजन का उत्पादन करना है। जैविक फार्म पर्यावरण के अनुकूल माने जाने वाले तरीकों का उपयोग करते हुए पारंपरिक खेती के समान गुणवत्ता और उत्पादकता प्रदान करना चाहते हैं।

पारंपरिक खेती की तुलना में जैविक खेती आमतौर पर छोटे पैमाने पर उत्पादन पर केंद्रित होती है, जिसमें बड़े पैमाने पर उत्पादन शामिल हो सकता है।

जैविक खेती के फायदे:

- जैविक खेती अनुवंशिक रूप से संशोधित जीवों का उपयोग नहीं करती है, जिससे यह फसलें अधिक प्राकृतिक रूप से उगाई जाती हैं। इससे प्रदूषण, उत्परिवर्तन और हानि का जोखिम कम होता है।
- जैविक खेती मिट्टी को नुकसान नहीं पहुंचाती है, क्योंकि यह कीटनाशकों और संश्लेषित उर्वरकों के बिना काम करती है।
- जैविक खेती से उत्पादित फसलें अधिक पौष्टिक होती हैं क्योंकि उसमें प्राकृतिक पोषक तत्व होते हैं।
- जैविक खेती स्वस्थ कार्य वातावरण प्रदान करती है और प्रदूषण को कम करती है।
- इससे फसलों की कीटों और बीमारियों के प्रति प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि होती है, जिससे उत्पादन लागत कम होती है।
- जैविक खेती से अधिक प्रकार की फसलें उगाई जा सकती हैं, जो भूमि की उपजाऊता को बढ़ाता है।
- इससे जलवायु के अनुकूल और पर्यावरण के लिए अधिक सहायक तरीके उपयोग किए जा सकते हैं, जो कि बेहतर पर्यावरण संतुलन का संरक्षण करता है।
- जैविक खेती टिकाऊ होती है, क्योंकि इससे भूमि और पर्यावरण को कम नुकसान पहुंचता है।

जैविक खेती के नुकसान :-

- **सब्जिडी का अभाव:** जैविक खेती को सरकार द्वारा प्रोत्साहन नहीं मिलता है, जिससे किसानों को अधिक लागतों का सामना करना पड़ता है।
- **कीटनाशकों और अन्य रसायनों का उपयोग:** कुछ स्थितियों में, जैविक किसानों को कीटनाशकों और

रसायनों का उपयोग करना पड़ सकता है, जो कि पर्यावरण को अधिक हानि पहुंचा सकता है।

- **बड़ा प्रारंभिक निवेश:** जैविक खेती के लिए उच्च प्रारंभिक निवेश की आवश्यकता होती है, जो कि किसानों के लिए कठिन हो सकता है।
- **ज्ञान-प्रधान होना:** जैविक खेती एक ज्ञान-प्रधान प्रक्रिया है और इसमें अधिक काम की आवश्यकता होती है।
- **विपणन में कठिनाई:** जैविक उत्पादों के लिए विपणन की कमी हो सकती है, जिससे किसानों का राजस्व कम हो सकता है।
- **उच्च लागत:** जैविक खेती की उत्पादन की लागत अक्सर अधिक होती है, जो कि किसानों को बाजार में प्रतिस्पर्धा में कठिनाई आ सकती है।

निष्कर्ष

जैविक खेती की विपरीत पक्षों और सकारात्मक पक्षों का अध्ययन करते समय, हमें यह स्पष्ट दिखाई देता है कि इस प्रकार की खेती एक संतुलित और स्थायी प्रणाली को प्रोत्साहित करती है, जो प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करते हुए उत्पादन को बढ़ावा देती है। जैविक खेती से किसानों की आय भी बढ़ती है और प्रदूषण का स्तर भी कम होता है। इसके साथ ही, जैविक खेती भारतीय खाद्य सुरक्षा को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। हालांकि, कुछ दलों का मानना है कि जैविक खेती से उत्पादन की गुणवत्ता में कमी आती है और यह अधिक खर्चीला होता है। वे यह भी दावा करते हैं कि इस प्रकार की खेती से फसलों की उपज भी कम होती है। सम्पूर्ण रूप से, जैविक खेती के प्रत्येक पक्षों को ध्यान में रखते हुए, हमें इस प्रकार की खेती के लाभों और चुनौतियों को संतुलित रूप से देखना चाहिए। उचित नीतिगत और प्रौद्योगिकी उन्नति के माध्यम से, हम जैविक खेती को और भी सुधार सकते हैं और इसके लाभों को मानव समाज के लिए अधिक सुलभ और स्थायी बना सकते हैं।